# Hindi final

(a) शब्दार्थौ शरीरं तावत् काव्यम् — दण्डी
(b) काव्यं ग्राह्यम् अलंकारात् — वामन
(c) मुख्यार्थ हतिर्दोषः — मम्मट
(d) करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्य निबन्धनम — भामह

(a) "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" — भामह
(b) "करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधु काव्यनिबन्धनम" — भामह

(a) "काव्यं ग्राह्यम् अलंकारात्" — वामन
(b) काव्य सदृष्टा दृष्टार्थ प्रीति-कीर्ति हेतुत्वात्" वामन
(c) "रीतिरात्मा काव्यस्य"। — वामन
(a) "मुख्यार्थ हतिर्दोषः" — मम्मट
(b) तद् दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि" — मम्मट

(a) शब्दार्थौ शरीरं तावत् काव्यम् — दण्डी
(b) शरीरं तावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली" — दण्डी
(c) काव्यशोभाकरान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते"

(a) "रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्" पंडितराज जगन्नाथ।

## रस

(i) रस को काव्य की आत्मा कहा गया है।

(ii) इसको आनंद स्वरूप ब्रह्म माना गया है।

(iii) इसे काव्यीय आलोचना का मानदण्ड माना गया है।

(iv) अनेक प्रकार के भावों से रस की निष्पत्ति होती है।

(v) विभाव, अनुभाव एवं संचारी भावों का आस्वादन करते हुए सहृदय जन रस जन रस का आनंद लेते हैं।

(vi) भरतमुनि — विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पत्ति :"

⇒ विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव आदि स्थायी भावों के साथ मिलकर स्थायी भाव रस रूप में निष्पत्ति होता है।

निष्पत्ति - निकलना।

(vii) रस को ब्रह्मानंद सहोदर माना गया है।

भरतमुनि ने रस के तीन अंगों विभाव अनुभाव एवं व्यभिचार का उल्लेख किया है किन्तु आगे की पंक्तियों में स्थायी भावों को ही रस कहा है।

(viii) अत: विभाव अनुभाव (व्यभिचारी) संचारी भाव आदि रस के अंग हैं।

इन तत्वों की संयोग से रस की निष्पत्ति हुई है।

(1४) भरत के अनुसार मानसिक अवस्थाओं का भावों का योजक प्रदर्शन ही "भाव" है।

मानव के हृदय में वासना के रूप में स्थित रहने वाले मनोविकारों को कलाओं में भाव कहते हैं। यह भाव अनंत होते हैं किन्तु कुछ ऐसे भाव होते हैं जो स्थायी रूप से सदैव मानव में होते हैं। सदा रहने के कारण उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। यह सुप्तावस्था में रहते हैं किन्तु विशिष्ट परिस्थितियों में जाग्रत होकर कार्य करने लगते हैं जैसे — वीणा के तारों में सोये हुए स्वर अँगुली के स्पर्श से मोहक राग में परिणत हो जाते हैं।

मिस - के बहाना

परस - छूना

"भयप्रकट कृपाला"

कौशल्या हितकारी

मनोहर - सुन्दर

गात - शरीर

निकेत - स्थान, घर

आहार, भय, निन्द्रा, मैथुन (बालक) से जानते हैं ईश्वर देते हैं।

लव - पल

कौतुक - जिज्ञासा

त्रास - डर, भय

नाइसिर - सारसूत्रधार (constancy)

रुचिर - बढ़िया

Hindi Final.

पद - कमल
निराला - कामना हो।
निराला
ज्ञानशिखा - सूर्य की किरणें।

भाव — लोभ, करुणा, आशा, मोह, इत्यादि मनोविकार हैं। इन्हीं मनोविकार को काव्य में भाव कहते हैं। भय, निन्दा, सिंगार और आहार

विभाव —

परिभाषा → एक वस्तु एक दूसरे में कहीं-कहीं परिलक्षित होता है।

किसी वस्तु की परिभाषा देने में उस वस्तु में निहित, उस वस्तु को परिभाषित करना पड़ता जो दूसरे में नहीं है जैसे मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है।

आलम्बन

विभाव — वे व्यक्ति या पदार्थ जो भावों उत्पादन के मूलकारण हैं वे विभाव कहलाते हैं।

आलम्बन — जिसके कारण वह भावना (मनोवेदना) उत्पन्न होती है वह विभाव है। उद्दीपन भावना उत्पन्न करने की।

बलराम कुमार